"डॉ.राही मासूम रजा कृत "आधा गाँव" उपन्यास का अनुशीलन"

विषयसूची

पृ.क्र.

प्रथम अध्याय – राहीजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 से 17 तक

अ) **व्यक्तित्व** – जन्म, माता–पिता, शिक्षा, नौकरी–व्यवसाय, सच्चे मित्र, बहुभाषिक, बहुमूखी साहित्यकार, सच्चा साहित्यिक, विवशता का शिकार, प्रगतिशील विचारक, कर्मयोगी , पुरे भारतीय गंगापुत्र, मृत्यु

आ) **कृतित्व** – उपन्यासकारः डॉ.राही मासूम रजा– आधा गाँव, हिम्मत जौनपुरी, टोपी शुक्ला, ओस की बूँद, दिल एक सादा कागज, सीन 75, कटरा–बी–आर्जू आदि

द्वितीय अध्याय – उपन्यास के तत्वों के आधारपर "आधा गाँव" का अनुशीलन 18 से 60 तक

अ) **उपन्यास के तत्व** – कथानक या कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण संवाद या कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण भाषा और शैली, उद्‌दैश्य, शीर्षक

आ) **"आध गाँव" तात्विक विवेचन** आधा गाँव का कथानक, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, संवाद कथोपकथन, भाषा–शैली, देशकाल तथा वातावरण, उद्‌दैश्य, शीर्षक

तृतीय अध्याय – "आधा गाँव" उपन्यास में आँचलिकता 61 से 110 तक

अ) **भूमिका** – अंचलः अर्थ, परिभाषा, स्वरुपनिश्चिति, आँचलिकता की विशेषता, सीमित भौगोलिक परिवेश, प्रकृति का प्रधान रुप से चित्रण, प्रकृति का पार्श्वभूमि के रुप में चित्रण, लोकसंस्कृति का सम्पूर्ण अंकन, लोकजीवन और नवीन सामाजिक चेतना, वास्तव–वादो दृष्टिकोण, समाज के सभी वर्गों का उदार–वादी दृष्टि से चित्रण, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का अंकन, स्थानीय बोली, प्रादेशिक

अस्मिता और आत्मीयता का भाव, ग्रामीण वातावरण और पिछडे हुए लोगों का जीवन विस्मय और कौतुहल की भावना, जातिवाद, स्थानीय रंग, लेखक का समाजशास्त्रीय और सौदर्यवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय जागरण की भावना और जन–जागरण की नई दिशा, फोटोग्राफिक शैली, लोक–साहित्य,

(आ) **"आधा गाँव"** सीमित भौगोलिक परिवेश का अंकन, प्रकृति का प्रधान रुप से चित्रण, प्रकृति का पार्श्वभूमि के रुप मे चित्रण, समाज–जीवन का चित्रण, लोकजीवन और नवीन सामा–जिक चेतना, वास्तववादी दृष्टिकोण, समाज के सभी वर्गों का समाजवादी दृष्टि से चित्रण युग–चेतना की अभिव्यक्ति, स्थानीय बोली, प्रादेशिक अस्मिता और आत्मीयता का भाव, ग्रामीण वातावरण और पिछडे हुए लोगों का जीवन, विस्मय और कौतुहल की भावना, जातिवाद, स्थानीय रंग, लेखक का समाज–शास्त्रीय और सौंदर्यवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय जागरण की भावना और जन–जागरण की नई दिशा, फोटोग्राफिक शैली, लोक–साहित्य

चतुर्थ अध्याय – आधा गाँव" मे चित्रित समस्याएँ 111 से 135 तक

साम्प्रदायिकता की समस्या, जातिवाद की समस्या, जमीदारों के शोषण की समस्या, जमीदांरों की मानसिकता, भाषा समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, दरिद्रता, ऋण की समस्या, युध्द की समस्या, प्रेम–विवाह की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, अवैध मातृत्व की समस्या, वेश्यावृत्ति, रखैलप्रथा, विधवा समस्या, निष्कर्ष

पंचम अध्याय – उपसंहार 136 से 141 तक

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची 142 से 144 तक